संक्षिप्त बुद्धचरित

कक्षा 8 के लिए हिंदी की पूरक पाठ्यपुस्तक

0822

NBCampus

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

2019-20

prilims.indd 1 3/19/2019 2:09:38 PM

प्रथम संस्करण

मार्च 1999 फाल्गुन 1920

पुनर्मुद्रण

मार्च 2005 फाल्गुन 1926

नवंबर 2005 कार्तिक 1927

मार्च 2019 चैत्र 1941

PD 50T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 1999

₹ 45.00

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा .....

.....द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-93-5292-125-6

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमित के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, और न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट धनकल बस स्टॉप पिनहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*एम. सिराज अनवर*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*अबिनाश कुल्लू*
संपादन सहायक	:	*एम. लाल*
उत्पादन सहायक	:	*ओम प्रकाश*

आवरण एवं चित्र

अरूप गुप्ता

NBCampus

prilims.indd 2 3/19/2019 2:09:38 PM

प्रकाशक की टिप्पणी

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) बच्चों और शिक्षकों के लिए विद्यालयी पाठ्यपुस्तकें और अन्य शैक्षिक सामग्री तैयार तथा प्रकाशित करती रही है। ये प्रकाशन विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों और शिक्षक-प्रशिक्षकों से प्राप्त पुनर्निवेशन के आधार पर नियमित रूप से संशोधित किए जाते हैं। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा किए गए शोध-कार्य भी इस पाठ्य सामग्री के संशोधन व उसे अद्यतन बनाने का आधार होते हैं।

यह पुस्तक विद्यालयी शिक्षा के लिए *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2000* और इस रूपरेखा के अनुरूप तैयार किए गए पाठ्यक्रम पर आधारित है। एन.सी.ई.आर.टी. की कार्यकारिणी समिति की दिनांक 19 जुलाई 2004 को आयोजित बैठक में पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता से संबंधित सभी पहलुओं पर चर्चा की गई और यह निर्णय लिया गया कि सभी विषयों की पाठ्यपुस्तकों की शीघ्र ही समीक्षा की जाए। इस निर्णय का अनुपालन करते हुए एन.सी.ई.आर.टी. ने सभी पाठ्यपुस्तकों के परीक्षण के लिए 23 त्वरित समीक्षा समितियों का गठन किया। इन समितियों ने संकल्पनात्मक, तथ्यात्मक तथा भाषा संबंधी विविध अशुद्धियों की पहचान की। समीक्षा की इस प्रक्रिया में पहले किए गए पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन को भी ध्यान में रखा गया। यह प्रक्रिया अब पूर्ण हो चुकी है और पाई गई अशुद्धियों का सुधार कर दिया गया है। हमें आशा है कि पुस्तक का यह संशोधित संस्करण शिक्षण व अधिगम का प्रभावी माध्यम सिद्ध होगा। इस पुस्तक की गुणवत्ता में और अधिक सुधार के लिए हमें आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी

सचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
जनवरी 2005

NBCampus

prilims.indd 3 3/19/2019 2:09:38 PM

प्रस्तावना

भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया में 'रामायण' और 'महाभारत' को जो सम्मान और लोकप्रियता प्राप्त है, वही सम्मान और लोकप्रियता महाकवि अश्वघोष रचित महाकाव्य 'बुद्धचरित' को भी प्राप्त है, विशेषकर भारत के हिमालयी क्षेत्रों अर्थात् लद्दाख, हिमाचल, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश। इसी प्रकार नेपाल, भूटान, तिब्बत, चीन, मंगोलिया, जापान आदि देशों में भी यह महाकाव्य बहुत लोकप्रिय है। अश्वघोष की गणना बौद्ध धर्म महायान शाखा के उन्नायकों तथा विचारकों में की जाती है। इन्होंने महायान को सैद्धांतिक आधार प्रदान किया और समूचे एशिया में इसके प्रचार-प्रसार में महान योगदान दिया। अश्वघोष से लगभग 500-600 वर्षों के पश्चात् चीनी यात्री इत्सिंग ने अपनी भारत यात्रा संबंधी पुस्तक में अश्वघोष और उनकी रचनाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। उस समय भारत में जो भी बौद्ध विहार (मठ) थे, उनमें उनकी रचनाओं का बड़ी श्रद्धा के साथ गान हुआ करता था। उसने लिखा है कि ऐसा प्रकाश पुरुष प्रत्येक पीढ़ी में एक या दो ही होते हैं।

इत्सिंग के समान ही दूसरे चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी अश्वघोष का उल्लेख बड़ी श्रद्धा के साथ किया है तथा उन्हें महायान (बौद्ध धर्म की एक शाखा) का सूर्य कहा है। इसीलिए अश्वघोष के 'बुद्धचरित' तथा उनकी अन्य रचनाओं की विश्व के ऐसे साहित्य में गणना की जाती है, जिन्होंने समूची मानवता के चिंतन, मनन और आचरण को अनुप्राणित किया है और नयी दिशा दी है।

अश्वघोष ने 'बुद्धचरित' की रचना संस्कृत भाषा में की थी। कालांतर में इसकी मूल पांडुलिपि लुप्त हो गई, किंतु उसकी प्रसिद्धि बनी रही। चीनी भाषा में उसका अनूदित रूप विद्यमान था। इस ग्रंथ की एक मूल संस्कृत प्रतिलिपि खंडित रूप में केंब्रिज विश्वविद्यालय, लंदन में भी उपलब्ध थी। इन दोनों के आधार पर प्राच्य विद्या के अनेक पाश्चात्य विद्वानों ने इस ग्रंथ का अंग्रेज़ी अनुवाद 'सेक्रेट बुक ऑफ़ ईस्ट' पुस्तकमाला में सन् 1896 में प्रकाशित किया। इस अनुवाद के प्रकाशन के कुछ समय पश्चात् प्रसिद्ध भारतीय विद्वान महामहोपाध्याय हरिप्रकाश शास्त्री को नेपाल दरबार के पुस्तकालय में 'बुद्धचरित' की (केंब्रिज विश्वविद्यालय की प्रतिलिपि जैसी ही) एक प्रति मिली थी। चीनी भाषा के अतिरिक्त तिब्बती भाषा में भी 'बुद्धचरित' महाकाव्य का अनुवाद उपलब्ध था। चीनी और तिब्बती भाषाओं में अनूदित 'बुद्धचरित' के आधार पर इस महाकाव्य का संस्कृत में पुन: अनुवाद किया गया और अब यह ग्रंथ हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेज़ी, जर्मन आदि पाश्चात्य भाषाओं में भी उपलब्ध है।

उपुर्यक्त विवरण से यह भी स्पष्ट है कि दसवीं शताब्दी के बाद भारत का बहुत सारा प्राचीन साहित्य लुप्त हो गया और अश्वघोष जैसे अनेक कवि तथा विद्वान लेखक विस्मृत हो गए और उनकी रचनाएँ लुप्त हो गईं। परंतु यह सौभाग्य ही है कि हमारा बहुत सारा प्राचीन बौद्ध साहित्य विदेशों में

NBCampus

prilims.indd 5 3/19/2019 2:09:39 PM

विशेषकर एशियाई देशों में अनूदित रूप में सुरक्षित है। अत: हमें प्राचीन चीनी, जापानी, तिब्बती, मंगोली आदि भाषाओं का अध्ययन कर अपने प्राचीन साहित्य का पुन: अनुवाद करना चाहिए तथा समूचे एशिया के सांस्कृतिक विकास में भारत के योगदान को उजागर करना चाहिए।

अश्वघोष के जीवनवृत्त के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त नहीं होती है। इनकी रचनाओं में जो कुछ संकेत बिंदु मिलते हैं, उनके आधार पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि ये साकेत (अयोध्या) के निवासी थे। इनकी माता का नाम सुवर्णाक्षी था। वे बड़े विद्वान थे। उन्हें वेद-पुराण आदि शास्त्रों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त था। वे महाकवि के रूप में प्रसिद्ध थे। 'बुद्धचरित' उनकी उच्चकोटि की काव्य प्रतिभा का ज्वलंत उदाहरण है।

अवश्घोष ने बौद्ध दर्शन का गहन अध्ययन किया था। उन्होंने बौद्ध धर्म के नवीन रूप (महायान) के जन-जन में प्रचार के लिए नाट्य, नृत्य तथा संगीत के माध्यम से अपनी रचनाओं का गायन और मंचन भी किया था। चीनी परंपरा के अनुसार अश्वघोष कनिष्क के समकालीन थे। प्रोफ़ेसर जोंसटन महोदय ने 'बुद्धचरित' के अंग्रेज़ी अनुवाद की भूमिका में लिखा है कि अश्वघोष का जन्म 50 ई.पू. और 100 ई. के बीच हुआ था।

'बुद्धचरित' के अतिरिक्त अश्वघोष की कतिपय प्रसिद्ध रचनाएँ निम्नांकित हैं —

- *सूत्रालंकार* – यह पाली की सुंदर जातक कथाओं का संग्रह है। इस समय यह मूल संस्कृत रूप में नहीं मिलता है। परंतु इसका चीनी रूप उपलब्ध है और उसी पर आधारित फ्रांसीसी अनुवाद भी मिलता है।
- *महायान श्रद्धोत्पाद* – यह महायान बौद्ध धर्म का एक दार्शनिक ग्रंथ है। इसका मूल संस्कृत रूप प्राप्त नहीं है। इसके दो चीनी संस्करण उपलब्ध हैं।
- *वज्र सूची* – इसका मूल संस्कृत उपलब्ध नहीं है। इसका चीनी अनुवाद मिलता है। इसमें वर्ण-व्यवस्था का तीखा खंडन किया गया है।
- *शारिपुत्र प्रकरण आदि तीन नाटक* – इसका दूसरा 'शारद्वती पुत्र प्रकरण' भी है। यह नौ अंकों का प्रकरण नामक एक रूपक (नाटक) है।
- *सौदरनंद* – यह अठारह सर्गों का महाकाव्य है। इसमें बुद्ध के भाई नंद और उनकी पत्नी सुंदरी की कहानी है।

अश्वघोष और उनकी रचनाओं का भारतीय साहित्य की परंपरा में विशेष महत्त्व है, क्योंकि वे आदि कवि वाल्मीकि के परवर्ती और कालिदास के पूर्ववर्ती हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से वाल्मीकि तथा वेदव्यास के पश्चात् अश्वघोष का ही स्थान है। इन महाकवियों की रचनाओं – 'रामायण', 'महाभारत' और 'बुद्धचरित' को प्रारंभ से ही राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व प्राप्त होता रहा है। प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परंपरा के संदर्भ में वाल्मीकि, वेदव्यास और

prilims.indd 6 3/19/2019 2:09:39 PM

अश्वघोष के कालक्रम को ध्यान में रखते हुए ही इनके द्वारा रचित महाकाव्यों का संक्षिप्त रूप कक्षा– 6 (संक्षिप्त रामायण), कक्षा– 7 (संक्षिप्त महाभारत), कक्षा–8 (संक्षिप्त बुद्धचरित) में पूरक पाठ्यपुस्तकों के रूप में निर्धारित किया गया है। यह निर्धारण सभी दृष्टियों से समीचीन है।

'संक्षिप्त बुद्धचरित' अश्वघोष के बृहत् महाकाव्य 'बुद्धचरित' का सरल, रोचक और सजीव भाषा में हिंदी रूपांतरण है। संक्षिप्त होते हुए भी इसके अध्ययन से गौतम बुद्ध के जन्म, शिक्षा-दीक्षा, वैराग्य, तपस्या, साधना, ज्ञान-प्राप्ति, धर्मचक्र प्रवर्तन, बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार, महापरिनिर्वाण आदि का सम्यक परिचय मिल जाता है। ये बातें पुस्तक में क्रमायोजित अध्यायों से भी स्पष्ट हो जाती हैं।

भारतीय सांस्कृतिक विकास में बौद्ध धर्म का विशेष महत्त्व है। इस धर्म के नैतिक संदेशों का मानवता के उत्थान में बहुत बड़ा योगदान रहा है। वे हमें हमेशा सदाचार और सत्कर्म की प्रेरणा देते हैं। इस रचना को छात्रों की दृष्टि से सरल, सजीव और सुबोधगम्य बनाने का प्रयास किया गया है। आदि से अंत तक इसमें कहानी जैसी रोचकता बनी रहती है। दार्शनिक सिद्धांतों को भी बहुत सरल और सुग्राह्य रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्राचीन महाकाव्यों में प्राय: अतिमानवीय और दैवी चमत्कारों का समावेश मिलता है, किंतु 'संक्षिप्त बुद्धचरित' में इनका समावेश न करके यथासंभव मानवीय पक्ष को ही उजागर किया गया है।

आशा है, इस रूप में यह पुस्तक विद्यार्थियों के लिए विशेष उपादेय और प्रेरणादायी सिद्ध होगी।

इस संस्करण के बारे में

'संक्षिप्त बुद्धचरित', एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा पूर्व प्रकाशित पुस्तक है। इस पुस्तक को पाठ्यक्रम में पुन: शामिल किया गया है तथा चित्र प्रसंगानुसार बदले गए हैं। कहीं-कहीं संदर्भानुसार चित्र की ज़रूरत थी, इसलिए वहाँ नये चित्र दिये गए हैं। यह कक्षा 8 की पूरक पाठ्यपुस्तक है, पुस्तक में बच्चों के स्तरानुसार अधिक दृश्य हों तो पाठ्यपुस्तक बच्चों के लिए आर्कषक और रोचक बन जाती है। प्राय: देखा गया है, वर्णनात्मक शैली रुचिकर नहीं होती उस वर्णन में चित्र भी साथ-साथ हों तो पाठ्य सामग्री समझने में सरल हो जाती है। इसी अवधारणा को समझते हुए हमने प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में आवरण, कलेवर व चित्रों का संदर्भानुसार समायोजन किया है।

NBCampus

आभार

'संक्षिप्त बुद्धचरित', एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा पूर्व प्रकाशित पुस्तक है। इस पुस्तक को पाठ्यक्रम में पुन: शामिल करने तथा प्रकाशन की अनुमति देने हेतु एच.के. सेनापति, *निदेशक*, एन.सी.ई.आर.टी., के प्रति हार्दिक कृतज्ञता एवं आभार व्यक्त किया जाता है।

इस पुस्तक के निर्माण में सहयोग के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् निरंजन कुमार सिंह, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर, (सेवानिवृत्त),* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; अनुवाद एवं संक्षेपण के लिए माणिक गोविंद चतुर्वेदी, *प्रोफ़ेसर (सेवानिवृत्त),* केंद्रीय हिंदी संस्थान, नयी दिल्ली; आनंद प्रकाश व्यास, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर (सेवानिवृत्त),* दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; इंद्रसेन शर्मा, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर (सेवानिवृत्त),* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; मान सिंह वर्मा, *अध्यक्ष*, हिंदी विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ उत्तर प्रदेश; लीलाधर शर्मा पर्वतीय, *उपनिदेशक (सेवानिवृत्त),* सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ, उत्तर प्रदेश; देवेंद्र दीपक, *निदेशक (सेवानिवृत्त),* हिंदी ग्रंथ अकादमी, मध्य प्रदेश; प्रभाकर द्विवेदी, *मुख्य संपादक (सेवानिवृत्त),* प्रकाशन प्रभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; श्यामबिहारी राय, *संपादक,* न्यूपा, नयी दिल्ली; सुरेश पंत, *प्रवक्ता (सेवानिवृत्त),* रा.उ.मा.वि., जनकपुरी, नयी दिल्ली; नीरा नारंग, *वरिष्ठ प्रवक्ता*, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; तथा अनिरुद्ध राय, *प्रोफ़ेसर एवं समन्वयक (सेवानिवृत्त),* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; संध्या सिंह *प्रोफ़ेसर* एवं *विभागाध्यक्ष* भाषा शिक्षा विभाग एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; के.सी. त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर* एवं *पूर्व विभागाध्यक्ष*, भाषा शिक्षा विभाग एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; लालचंद राम *प्रोफ़ेसर* भाषा शिक्षा विभाग एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; की भी आभारी है, जिन्होंने जून-जुलाई 2017 में पुस्तक को टंकित कराकर संशोधन, परिमार्जन कर पाण्डुलिपि को अंतिम रूप प्रदान कर पुस्तक के प्रकाशन को प्राथमिकता देकर पाठ्यक्रम में पुन: शामिल कराने की पहल की।

परिषद्, अनीता कुमारी, रेखा शर्मा (भाषा शिक्षा विभाग), सचिन तँवर एवं प्रवीन कुमार, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा) एवं भाषा संपादन के लिए ममता गौड़, *हिंदी संपादक* (संविदा) प्रकाशन प्रभाग का विशेष साधुवाद ज्ञापित करती है।

NCERT not to be republished

prilims.indd 8 3/19/2019 2:09:39 PM

विषय-सूची

प्रकाशक की टिप्पणी *iii*

प्रस्तावना *v*

अध्याय 1 आरंभिक जीवन **1**

- सिद्धार्थ का जन्म 1
- अंत:पुर विहार 7
- संवेग उत्पत्ति 10

अध्याय 2 अभिनिष्क्रमण **18**

- गृह-त्याग 18
- छंदक की वापसी 22
- तपोवन प्रवेश 26
- अंत:पुर विलाप 28
- कुमार की खोज 32
- बिंबसार से भेंट 35
- काम निंदा 37

अध्याय 3 ज्ञान-प्राप्ति **40**

- दर्शन परिचर्चा 40
- मार की पराजय 44
- बुद्धत्व-प्राप्ति 46

अध्याय 4 धर्मचक्र प्रवर्तन **49**

- काशी-गमन 49
- दीक्षादान 52
- अनाथपिंडद की दीक्षा 57
- पिता-पुत्र मिलन 58
- जेतवन 60
- आम्रपाली के उद्यान में 63

NBCampus

prilims.indd 9 3/19/2019 2:09:39 PM

अध्याय 5 महापरिनिर्वाण **66**

- निर्वाण की ओर 66
- लिच्छवियों पर अनुग्रह 67
- महापरिनिर्वाण 71
- महापरिनिर्वाण के बाद 73

शब्दार्थ और टिप्पणी **80**

NBCampus

अध्या 1

आरंभिक जीवन

0822CH01

सिद्धार्थ का जन्म

प्राचीन काल में भारत में एक प्रसिद्ध राजवंश था नाम था 'इक्ष्वाकु वंश'। इसी वंश के शाक्य-कुल में शुद्धोदन नाम के एक राजा हुए। कपिलवस्तु उनके राज्य की राजधानी थी। उनके राज्य में सारी प्रजा सब प्रकार से सुखी और सुरक्षित थी। पृथ्वी जैसी गौरवशाली उनकी पत्नी थी, नाम था-माया।

एक रात महारानी माया ने एक विचित्र स्वप्न देखा, उन्होंने देखा, जैसे चंद्रमा बादलों में चुपचाप प्रवेश करता है, वैसे ही एक सफ़ेद हाथी उनके शरीर में प्रवेश कर गया है। इससे उन्हें न किसी प्रकार का भय हुआ न कष्ट। उन्हें सुखद अनुभूति हुई कि उन्होंने गर्भधारण कर लिया है।

सचमुच गर्भधारण करने के कुछ मास बाद महारानी माया को किसी सघन वन में एकांतवास करने की इच्छा हुई। उन्होंने अपने पति महाराज शुद्धोदन से निवेदन किया कि अब वे कुछ समय के लिए नंदन वन के समान सुंदर लुंबिनी वन में निवास करना चाहती हैं। अपनी गर्भवती पत्नी की इच्छा का सम्मान करते हुए महाराज शुद्धोदन ने स्वीकृति प्रदान की और अनेक सेवक-सेविकाओं के साथ महारानी ने लुंबिनी वन के लिए प्रस्थान किया।

कुछ समय तक सुख से लुंबिनी वन में निवास करने के बाद एक दिन महारानी को लगा कि अब प्रसवकाल आ गया है। अत: वे एक शय्या पर लेट गईं। उस समय अनेक स्त्रियों ने उनका अभिनंदन किया। जैसे ही पुष्य नक्षत्र का उदय हुआ, महारानी माया ने बिना किसी पीड़ा के एक पुत्र को जन्म दिया। उन्हें लगा, जैसे वह आकाश से उतर आया हो। उसका अंत:करण पवित्र था, उसके शरीर से तेज निकल रहा था, जिससे सभी दिशाएँ प्रकाशित हो गईं। सूर्य के समान तेजस्वी, परंतु देखने में चंद्रमा के समान प्रिय लगने वाले इस बालक के शरीर से प्रकाश निकल रहा था।

NBCampus

Chapters.indd 1 3/18/2019 5:21:06 PM